**Pedagogy Insights**
*An International Peer reviewed Journal of Multidisciplinary research*

**Vol. 1, Issue. 1, April-June 2026, 14–21**
**ISSN: 3139-843X**
**DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21915128**

# आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए०आई०) युग में बाल शिक्षा के क्षेत्र में बाल साहित्य की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता

**डॉ० ऋषि कपूर[1*]**

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, आर०पी०पी०जी० कॉलेज, मीरगंज, बरेली

## Abstract

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के वर्तमान युग में शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र परिवर्तन हुए हैं। बाल शिक्षा में एआई-आधारित शैक्षिक ऐप्स, अनुकूली शिक्षण मंच, वर्चुअल ट्यूटर और इंटरैक्टिव खेलों का व्यापक उपयोग हो रहा है। ऐसे परिवेश में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या पारंपरिक बाल साहित्य—कहानियाँ, कविताएँ, लोककथाएँ, नाटक और बाल पत्रिकाएँ—आज भी प्रासंगिक हैं। यह शोध पत्र इसी प्रश्न का विश्लेषण करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि एआई युग में बाल साहित्य की उपयोगिता समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उसका स्वरूप और प्रस्तुति अधिक विकसित हुई है। बाल साहित्य बच्चों के संज्ञानात्मक, भाषाई, सामाजिक, संवेगात्मक तथा नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह कल्पनाशीलता, सांस्कृतिक चेतना, मानवीय मूल्यों और आलोचनात्मक चिंतन का विकास करता है, जिसकी पूर्ति केवल तकनीकी साधनों से संभव नहीं है। शोध में एआई की सीमाओं, जैसे मानवीय संवेदनाओं और संदर्भगत समझ के अभाव, पर भी प्रकाश डाला गया है। साथ ही यह प्रतिपादित किया गया है कि एआई और बाल साहित्य परस्पर पूरक हैं। एआई के माध्यम से बाल साहित्य को अधिक व्यक्तिगत, सुलभ और आकर्षक बनाया जा सकता है। निष्कर्षतः, भविष्य की बाल शिक्षा एआई की तकनीकी दक्षता और बाल साहित्य की मानवीय गहराई के संतुलित समन्वय पर आधारित होनी चाहिए।

**Keywords**: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बाल शिक्षा, बाल साहित्य, डिजिटल युग, समग्र विकास।

**ARTICLE HISTORY**
**Received:** 15 May 2026; **Accepted:** 25 May 2026; **Published:** 10 June 2026

**CITATION**
डॉ० ऋषि कपूर., (2026). आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए०आई०) युग में बाल शिक्षा के क्षेत्र में बाल साहित्य की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता. *Pedagogy Insights*, 1(1), 14-21.
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21915128

## प्रस्तावना

बचपन मानव जीवन का सर्वाधिक कोमल, ग्रहणशील और नींव रखने वाला चरण है। इस अवस्था में प्राप्त अनुभव, संस्कार

**COPYRIGHT:** © 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

और ज्ञान सम्पूर्ण जीवन की दिशा तय करते हैं। शिक्षा इस नींव को मजबूत करने का प्राथमिक साधन रही है और इस शिक्षा में साहित्य ने सदैव एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बाल साहित्य चाहे वह दादी-नानी के मुख से निकली लोककथाएँ हों या लिखित रूप में उपलब्ध कहानी-कविताओं का भंडार बच्चे की दुनिया को शब्दों के रंगों से सजाता आया है।

किंतु 21वीं सदी का वर्तमान दौर तकनीकी क्रांति का दौर है जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) सर्वाधिक चर्चित और प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरी है। शिक्षा का क्षेत्र इससे अछूता नहीं रहा। एआई ने शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को व्यक्तिगत, अनुकूलनयोग्य और डेटा-संचालित बना दिया है। आज बच्चे टैबलेट पर एआई-पावर्ड ऐप्स के माध्यम से गणित सीख रहे हैं वर्चुअल असिस्टेंट्स से भाषा का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैंऔर ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर) के जरिए इतिहास का अन्वेषण कर रहे हैं। इस गतिशील और आकर्षक डिजिटल वातावरण में, कागज की पुस्तकों और मौखिक कहानियों के रूप में पारंपरिक बाल साहित्य की प्रासंगिकता पर एक बड़ा प्रश्न चिह्न लग गया है।

क्या वाकई बाल साहित्य अब अप्रासंगिक हो गया है क्या एआई और डिजिटल माध्यम इसकी सारी भूमिकाओं को अधिक कुशलता से निभा सकते हैं? या फिर दोनों के बीच एक सहजीवी संबंध संभव है? यह शोध पत्र इन्हीं जटिल प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है। हमारा मुख्य तर्क यह है कि एआई युग में बाल साहित्य की आवश्यकता समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उसकी भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। यह मानवीय स्पर्श सांस्कृतिक धरोहर नैतिक मूल्यों और रचनात्मक कल्पना का वाहक बनकर एआई की तकनीकी शक्ति को संतुलित करता है तथा बच्चे के समग्र विकास के लिए एक अनिवार्य आधार प्रदान करता है।

## 1. बाल साहित्य: अर्थ विशेषताएँ एवं ऐतिहासिक महत्व-

### 1.1. बाल साहित्य का अर्थ एवं दायरा

बाल साहित्य का तात्पर्य उस साहित्यिक रचना से है जो विशेष रूप से बच्चों की रुचि, मानसिक स्तर, भावनात्मक आवश्यकताओं और शैक्षणिक विकास को ध्यान में रखकर रची गई हो।

इसका दायरा अत्यंत व्यापक है। इसमें सम्मिलित हैं- लोक साहित्य (दंतकथाएँ, लोककथाएँ मुहावरे पहेलियाँ जादू-टोने की कहानियाँ), कहानी साहित्य (परीकथाएँ रोमांचक कहानियाँ रीयलिस्टिक फिक्शन, पौराणिक कथाएँ), काव्य साहित्य (बालगीत, कविताएँ नर्सरी राइम्स), नाटक एवं एकांकी, जीवनी एवं ऐतिहासिक कथाएँ, विज्ञान एवं ज्ञान-वर्धक साहित्य, चित्रात्मक पुस्तकें (पिक्चर बुक्स) और कॉमिक्स।

### 1.2. बाल साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

बाल साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी भाषा की सरलता एवं रोचकता है। इसकी भाषा बच्चों की आयु, रुचि और समझ के स्तर के अनुरूप सरल, स्पष्ट तथा आकर्षक होती है। सहज शब्दावली और प्रभावशाली शैली के कारण बच्चे साहित्य से आसानी से जुड़ जाते हैं तथा पढ़ने में रुचि विकसित करते हैं।

बाल साहित्य में कल्पनाशीलता का विशेष पुट होता है। यह बच्चों को अद्भुत, रोमांचक और नवीन संसारों की यात्रा कराता है, जिससे उनकी सृजनात्मक शक्ति और कल्पना का विकास होता है। कहानियों के पात्र, घटनाएँ और परिस्थितियाँ बच्चों को नए विचारों और संभावनाओं से परिचित कराती हैं।

बाल साहित्य मनोरंजन के साथ शिक्षा प्रदान करता है। यह प्रत्यक्ष उपदेश देने के बजाय कहानी, कविता, नाटक और अन्य रोचक विधाओं के माध्यम से ज्ञान, अनुभव और जीवनोपयोगी सीख प्रदान करता है। इस प्रकार बच्चे आनंदपूर्वक सीखते हैं और सीखने की प्रक्रिया स्वाभाविक बन जाती है।

बाल साहित्य नैतिक मूल्यों के संचार का भी प्रभावी माध्यम है। इसमें सत्य, ईमानदारी, दयालुता, सहयोग, परिश्रम और सहानुभूति जैसे मानवीय मूल्यों को सहज रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इन मूल्यों का बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, बाल साहित्य सांस्कृतिक पहचान का निर्माण करता है। लोककथाएँ, पौराणिक कथाएँ और सांस्कृतिक प्रसंग बच्चों को अपने समाज, संस्कृति, परंपराओं और विरासत से परिचित कराते हैं। इससे उनमें सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक जुड़ाव की भावना विकसित होती है।

बाल साहित्य बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा एवं सामंजस्य भी प्रदान करता है। विभिन्न कहानियों और पात्रों के माध्यम से बच्चे डर, खुशी, दुःख, क्रोध और उत्साह जैसी भावनाओं को समझते हैं तथा उनसे स्वस्थ ढंग से निपटना सीखते हैं। इस प्रकार बाल साहित्य उनके भावनात्मक विकास और मानसिक संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

### 1.3. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: बदलते स्वरूप अटल महत्व

बाल साहित्य का इतिहास मानव सभ्यता जितना ही पुराना है। मौखिक परंपरा में दादी-नानी की कहानियों ने सदियों तक पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान का संचार किया। भारतीय संदर्भ में पंचतंत्र, हितोपदेश जातक कथाएँ बाल साहित्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं जिनका उद्देश्य बुद्धिमत्ता और जीवन-कौशल सिखाना था। आधुनिक युग में रवींद्रनाथ टैगोर प्रेमचंद सुखदेव भाटिया केदारनाथ अग्रवाल डॉ. हरिकृष्ण देवसरे जैसे रचनाकारों ने बाल साहित्य को नया आयाम दिया। इस ऐतिहासिक यात्रा से स्पष्ट है कि बाल साहित्य समय के साथ अपने स्वरूप (मौखिक से लिखित फिर चित्रात्मक) में बदलाव करता रहा है, किंतु बच्चे के जीवन में उसकी केंद्रीयता कभी कम नहीं हुई। यह सदैव समाज का दर्पण और मार्गदर्शक रहा है।

## 2. ए०आई० एवं आधुनिक बाल शिक्षा: संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

### 2.1. ए०आई० का प्रवेश एवं योगदान

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने बाल शिक्षा को अधिक प्रभावी, रोचक और सुलभ बनाया है। इसका प्रमुख योगदान व्यक्तिगत शिक्षण में है, जहाँ एआई बच्चों की रुचियों, क्षमताओं और सीखने की गति का विश्लेषण कर उनके लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री तैयार करता है। इसके अतिरिक्त, अनुकूली मूल्यांकन के माध्यम से यह बच्चों के प्रदर्शन का वास्तविक समय में आकलन कर तत्काल फीडबैक प्रदान करता है तथा कठिनाई स्तर को स्वतः समायोजित करता है।

एआई-संचालित खेल, सिमुलेशन और इंटरैक्टिव गतिविधियाँ सीखने को आनंददायक बनाती हैं तथा जटिल अवधारणाओं को सरल रूप में प्रस्तुत करती हैं। साथ ही, भाषण-से-पाठ और पाठ-से-भाषण जैसी सहायक तकनीकें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शिक्षा को अधिक समावेशी बनाती हैं। वर्चुअल ट्यूटर और चैटबॉट किसी भी समय सहायता उपलब्ध कराकर सीखने की प्रक्रिया को समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त करते हैं। इस प्रकार, एआई बाल शिक्षा के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

## 2.2. एआई की सीमाएँ एवं चिंताएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनेक लाभों के बावजूद उसमें कुछ ऐसी मौलिक सीमाएँ हैं जो बाल शिक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण चिंता का विषय हैं। एआई बच्चे की भावनात्मक आवश्यकताओं, गैर-मौखिक संकेतों तथा मानवीय सहानुभूति को पूरी तरह समझने में सक्षम नहीं है। वह बच्चे की निराशा, उत्साह, भय या अन्य भावनात्मक अवस्थाओं का उसी संवेदनशीलता से आकलन नहीं कर सकता जैसा एक शिक्षक, अभिभावक या अन्य मनुष्य कर सकता है।

एआई मुख्यतः उपलब्ध डेटा और पैटर्न के आधार पर कार्य करता है। यद्यपि वह नई सामग्री तैयार कर सकता है, फिर भी उसमें मौलिक रचनात्मकता, स्वतंत्र कल्पनाशक्ति और कलात्मक अभिव्यक्ति की वह गहराई नहीं होती जो मानवीय सृजन की विशेषता है। बच्चों की कल्पना और सृजनात्मक सोच के विकास के लिए मानवीय अनुभव और साहित्यिक अभिव्यक्ति अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं।

नैतिकता और मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में भी एआई की सीमाएँ स्पष्ट हैं। मानवीय मूल्यों, सही-गलत की सूक्ष्म समझ, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा नैतिक निर्णय क्षमता का विकास मुख्यतः मानवीय संवाद, अनुभव और साहित्य के माध्यम से ही संभव होता है। एआई इन जटिल मानवीय पहलुओं को पूर्णतः प्रतिस्थापित नहीं कर सकता।

इसके अतिरिक्त, एआई मॉडल जिस डेटा पर प्रशिक्षित होते हैं, उसमें सांस्कृतिक पूर्वाग्रह मौजूद हो सकते हैं। परिणामस्वरूप स्थानीय परंपराओं, लोक विश्वासों, सामाजिक संदर्भों और सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं को समझने में उन्हें कठिनाई होती है। साथ ही, अत्यधिक डिजिटल निर्भरता बच्चों को निष्क्रिय सूचना-उपभोक्ता बना सकती है, जबकि साहित्य का अध्ययन उन्हें सक्रिय चिंतन, कल्पना और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

## 2.3. एआई युग में बाल साहित्य की अनिवार्य उपयोगिता: एक विश्लेषण

एआई की सीमाओं के प्रकाश में, बाल साहित्य की उपयोगिता और अधिक स्पष्ट हो जाती है। यह केवल एक वैकल्पिक मनोरंजन नहीं, बल्कि बच्चे के समग्र विकास के लिए एक आवश्यक पोषक तत्व है।

## 2.4. संज्ञानात्मक एवं भाषाई विकास में भूमिका

बाल साहित्य बच्चों के भाषाई और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उन्हें समृद्ध शब्दावली, विविध वाक्य संरचनाओं, अलंकारों तथा भाषा की सौंदर्यात्मक शक्ति से परिचित कराता है। इसके माध्यम से बच्चों का संवाद कौशल विकसित होता है और वे अपने विचारों एवं भावनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करना सीखते हैं। साथ ही, साहित्य बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान की क्षमता का भी विकास करता है। कहानियों के पात्र जब विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हैं और उनके समाधान खोजते हैं, तो बच्चे तर्क करना, कारण-परिणाम संबंधों को समझना तथा वैकल्पिक समाधान तलाशना सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, कहानियों को सुनने और पढ़ने की प्रक्रिया बच्चों की स्मरण शक्ति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को भी सुदृढ़ बनाती है। विशेष रूप से लंबी कहानियाँ बच्चों की एकाग्रता, धैर्य और जानकारी को याद रखने की क्षमता में वृद्धि करती हैं, जिससे उनका समग्र संज्ञानात्मक विकास होता है।

## 2.5. संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास में योगदान

बाल साहित्य बच्चों के भावनात्मक और सामाजिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कहानियों के पात्रों और घटनाओं के माध्यम से बच्चे खुशी, गुस्सा, डर, ईर्ष्या, प्रेम तथा अन्य जटिल भावनाओं को पहचानना, समझना और उचित रूप से व्यक्त करना सीखते हैं। इस प्रक्रिया से उनमें भावनात्मक साक्षरता का विकास होता है, जो उन्हें स्वयं की भावनाओं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं को समझने में भी सहायता प्रदान करती है।

इसके अतिरिक्त, साहित्य बच्चों में सहानुभूति और परिप्रेक्ष्य ग्रहण करने की क्षमता विकसित करता है। विभिन्न पात्रों के अनुभवों, संघर्षों और भावनाओं से जुड़कर बच्चा स्वयं को उनकी स्थिति में रखकर सोचने का प्रयास करता है। इससे वह यह समझ पाता है कि अलग-अलग व्यक्तियों के दृष्टिकोण, अनुभव और परिस्थितियाँ भिन्न हो सकती हैं। यह समझ उसे अधिक संवेदनशील, सहिष्णु और मानवीय बनाती है।

बाल साहित्य सामाजिक कौशलों और मानवीय संबंधों के विकास में भी योगदान देता है। कहानियों को सुनना, पढ़ना और उन पर चर्चा करना बच्चों के बीच संवाद और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करता है। विशेष रूप से सामूहिक कहानी-पठन जैसी गतिविधियाँ सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देती हैं तथा परिवार और समुदाय के साथ बच्चों के संबंधों को अधिक सुदृढ़ बनाती हैं। इस प्रकार बाल साहित्य बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास का एक प्रभावी माध्यम है।

## 2.6. नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्त्व

बाल साहित्य बच्चों के नैतिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विकास की मजबूत नींव तैयार करता है। यह प्रत्यक्ष उपदेश देने के बजाय कहानी, कविता और अन्य साहित्यिक विधाओं के माध्यम से सत्य, अहिंसा, दया, सहयोग, ईमानदारी और करुणा जैसे नैतिक मूल्यों को सहज रूप से प्रस्तुत करता है। परिणामस्वरूप ये मूल्य बच्चों के अवचेतन मन में गहराई से स्थापित हो जाते हैं और उनके व्यवहार का हिस्सा बनने लगते हैं। साथ ही, बाल साहित्य सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण संरक्षक भी है। लोककथाएँ, पौराणिक कथाएँ तथा स्थानीय साहित्य बच्चों को अपनी संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक विरासत से जोड़ते हैं। इससे उनमें सांस्कृतिक गौरव की भावना विकसित होती है तथा वे विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान का दृष्टिकोण अपनाना सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, साहित्य बच्चों के व्यक्तित्व और पहचान के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। जब बच्चे साहित्य में अपने जैसे पात्रों, अनुभवों और परिस्थितियों को देखते हैं, तो वे स्वयं को उनसे जोड़ पाते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और उनकी आत्म पहचान अधिक सशक्त बनती है।

## 2.7. कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता का प्रसार

बाल साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण योगदान बच्चों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता के विकास में निहित है। जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पूर्वनिर्धारित एल्गोरिदम और उपलब्ध डेटा के आधार पर कार्य करती है, वहीं बाल साहित्य बच्चों की कल्पना को असीम विस्तार प्रदान करता है। कहानियों में प्रस्तुत राक्षस, उड़ने वाले घोड़े, बोलते हुए पेड़, जादुई संसार और अद्भुत पात्र बच्चों के मन में नए विचारों और संभावनाओं का सृजन करते हैं। ऐसी कल्पनात्मक परिस्थितियाँ उनकी सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती हैं तथा उन्हें परंपरागत सीमाओं से परे सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। यही रचनात्मकता आगे चलकर नवाचार, वैज्ञानिक खोजों, कलात्मक अभिव्यक्ति और समस्या-समाधान की क्षमता का आधार

बनती है। इस प्रकार, बाल साहित्य बच्चों के मानसिक विकास को समृद्ध करते हुए उनके भविष्य के सृजनात्मक व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## 2.8. समन्वय का मार्ग: बाल साहित्य एवं एआई का सहजीवी संबंध

बाल साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को परस्पर प्रतिद्वंद्वी के रूप में नहीं, बल्कि सहयोगी के रूप में देखा जाना चाहिए। भविष्य की बाल शिक्षा का आदर्श स्वरूप इन दोनों के संतुलित समन्वय पर आधारित होगा। एआई बाल साहित्य की पहुँच, आकर्षण और प्रभावशीलता को बढ़ाने वाला एक शक्तिशाली उपकरण सिद्ध हो सकता है, जिससे बच्चों के सीखने के अनुभव को अधिक समृद्ध और व्यक्तिगत बनाया जा सकता है।

एआई के माध्यम से बच्चों की आयु, रुचियों तथा पढ़ने के स्तर के अनुसार अनुकूलित कहानियाँ तैयार की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी बच्चे की रुचि अंतरिक्ष, जानवरों या रहस्य कथाओं में है, तो एआई उसी के अनुरूप कहानी का निर्माण या रूपांतरण कर सकता है। इससे बच्चा कहानी के पात्रों और कथानक के चयन में भी सक्रिय भागीदारी कर सकता है।

इसके अतिरिक्त, एआई को संवर्धित वास्तविकता (AR) और आभासी वास्तविकता (VR) जैसी तकनीकों के साथ जोड़कर पारंपरिक कहानियों को इंटरैक्टिव अनुभवों में बदला जा सकता है। इस प्रकार बच्चा कहानी के पात्रों से संवाद कर सकता है, वातावरण का अन्वेषण कर सकता है तथा कथानक की दिशा को प्रभावित कर सकता है। एआई-संचालित स्मार्ट ऑडियोबुक्स और वॉयस असिस्टेंट्स भी कहानी को अधिक जीवंत बनाते हैं, जहाँ पात्रों के अनुसार आवाज़ों में परिवर्तन किया जा सकता है और बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकते हैं।

एआई भाषा अनुवाद और सुलभता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके माध्यम से विभिन्न भाषाओं के साहित्य को बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है, जिससे वे वैश्विक साहित्यिक संसार से परिचित हो सकें। साथ ही, यह दृष्टिबाधित बच्चों के लिए ऑडियो सामग्री तथा सीखने में कठिनाई वाले बच्चों के लिए सरल संस्करण उपलब्ध करा सकता है। इसके अतिरिक्त, एआई आधारित रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन सहायक बच्चों की पढ़ने की गति और समझ का विश्लेषण कर कठिन शब्दों की व्याख्या कर सकते हैं तथा कहानी से संबंधित प्रश्न पूछकर उनकी समझ को और अधिक गहरा बना सकते हैं। इस प्रकार एआई और बाल साहित्य का समन्वय बाल शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और आकर्षक बना सकता है।

बाल साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के एकीकृत शिक्षण मॉडल बच्चों के सीखने के अनुभव को अधिक रोचक, प्रभावी और सहभागितापूर्ण बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, हाइब्रिड लर्निंग किट में पारंपरिक चित्र पुस्तकों के साथ एआई आधारित ऐप जोड़े जा सकते हैं, जो पुस्तक को स्कैन करके पात्रों और दृश्यों को एनिमेटेड रूप में प्रस्तुत करें तथा संबंधित प्रश्नोत्तरी और गतिविधियाँ उपलब्ध कराएँ। इसी प्रकार, कहानी कहने वाले रोबोटिक साथी बच्चों के साथ संवाद करते हुए कहानियाँ सुना सकते हैं, उनकी प्रतिक्रियाओं और निर्देशों के अनुसार कथानक में परिवर्तन कर सकते हैं तथा बच्चों को स्वयं कहानी सुनाने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एआई आधारित क्रिएटिव राइटिंग प्लेटफॉर्म बच्चों की रचनात्मक लेखन क्षमता को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं। ऐसे प्लेटफॉर्म कहानी के कथानक के लिए नए विचार सुझा सकते हैं, वर्णन को समृद्ध बनाने हेतु उपयुक्त शब्द प्रदान कर सकते हैं तथा व्याकरण संबंधी त्रुटियों को सुधारने में सहायता कर सकते हैं। इस प्रकार, एआई और बाल साहित्य का समन्वय बच्चों के सीखने और सृजनात्मक विकास को नई

दिशा प्रदान कर सकता है।

## 3. चुनौतियाँ एवं भविष्य की दिशा

बाल साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समन्वय में अनेक संभावनाएँ हैं, किंतु इसके मार्ग में कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। सबसे प्रमुख चुनौती **डिजिटल विभाजन** की है। प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक समान पहुँच न होने के कारण अनेक बच्चे एआई-संवर्धित शैक्षिक संसाधनों और साहित्यिक अनुभवों से वंचित रह सकते हैं, जिससे शैक्षिक असमानता बढ़ने की आशंका रहती है।

एक अन्य महत्वपूर्ण चिंता **स्क्रीन टाइम में वृद्धि** से संबंधित है। डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन माध्यमों पर अत्यधिक निर्भरता बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य, दृष्टि, मानसिक संतुलन तथा सामाजिक संपर्क पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इसलिए तकनीक के उपयोग में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, **एआई द्वारा निर्मित सामग्री की गुणवत्ता और नियमन** भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ऐसी सामग्री शैक्षणिक दृष्टि से उपयुक्त, नैतिक रूप से स्वीकार्य तथा पूर्वाग्रहों और अनुपयुक्त विषयवस्तु से मुक्त हो। बच्चों के लिए सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराना शिक्षाविदों, तकनीकी विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं की साझा जिम्मेदारी है।

इस परिवर्तित परिदृश्य में **शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका** भी नई दिशा ग्रहण कर रही है। शिक्षकों को तकनीकी साक्षरता विकसित करने के साथ-साथ डिजिटल और मुद्रित साहित्य के बीच संतुलन स्थापित करने की क्षमता विकसित करनी होगी। वहीं, अभिभावकों को बच्चों के अध्ययन और पठन-पाठन में सक्रिय सहभागिता बनाए रखनी होगी।

भविष्य की दिशा एक **मानव-केंद्रित तकनीकी समर्थन प्रणाली** की ओर होनी चाहिए, जहाँ एआई केवल सहायक उपकरण के रूप में कार्य करे और बाल साहित्य का मानवीय, सांस्कृतिक तथा संवेदनात्मक सार केंद्र में बना रहे। अनुसंधान और विकास का उद्देश्य ऐसी तकनीकों का निर्माण होना चाहिए जो साहित्य की गहराई, सौंदर्य और प्रभावशीलता को बढ़ाएँ, न कि उसका स्थान लें।

## 4. निष्कर्ष

एआई युग में बाल साहित्य की प्रासंगिकता समाप्त होने के बजाय और अधिक बढ़ गई है। जैसे-जैसे शिक्षा और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी हस्तक्षेप बढ़ रहा है, वैसे-वैसे मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक निरंतरता तथा गहन रचनात्मकता की आवश्यकता भी अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। बाल साहित्य इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला एक प्रभावशाली माध्यम है, जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह केवल ज्ञान प्रदान नहीं करता, बल्कि बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास को भी सुदृढ़ बनाता है।

वास्तव में, एआई और बाल साहित्य के बीच संघर्ष की नहीं, बल्कि सहयोग की व्यापक संभावनाएँ हैं। एआई बाल साहित्य को नए आयाम प्रदान कर सकता है तथा उसे अधिक आकर्षक, सुलभ और व्यक्तिगत बना सकता है। फिर भी साहित्य का वह मूल तत्व, जो मनुष्य को भावनाओं, अनुभवों, कल्पनाओं और सपनों से जोड़ता है, तकनीक द्वारा पूर्णतः प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। साहित्य का मानवीय स्पर्श और उसकी संवेदनात्मक गहराई सदैव विशिष्ट बनी रहेगी।

अतः भविष्य की शिक्षा नीतियों, पाठ्यक्रमों और पारिवारिक शिक्षण प्रक्रियाओं में बाल साहित्य को केवल अध्ययन की सामग्री के रूप में नहीं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास के आधार स्तंभ के रूप में स्थान दिया जाना चाहिए। तकनीक और

साहित्य के संतुलित समन्वय के माध्यम से ही ऐसी पीढ़ी का निर्माण संभव है जो तकनीकी रूप से दक्ष होने के साथ-साथ संवेदनशील, रचनात्मक, मूल्यनिष्ठ तथा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी हुई हो। यही संतुलित और सार्थक शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।

## संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, केदारनाथ (2005). बाल साहित्य: स्वरूप और संभावनाएँ. राजकमल प्रकाशन।
2. देवसरे, हरिकृष्ण (2010). बाल साहित्य का इतिहास. भारतीय ज्ञानपीठ।
3. नंदा, स्मृति (2018). डिजिटल युग में बच्चे और पढ़ना. नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया।
4. सेलिगमैन, मार्टिन (2011). फ्लोरिश: अ विजनरी न्यू अंडरस्टैंडिंग ऑफ हैप्पीनेस एंड वेल-बीइंग. फ्री प्रेस। (भावनात्मक विकास पर)
5. टर्कल, शेरी. (2011) अलोन टुगेदर: व्हाई वी एक्सपेक्ट मोर फ्रॉम टेक्नोलॉजी एंड लेस फ्रॉम ईच अदर. बेसिक बुक्स। (तकनीक और मानव संबंधों पर)
6. UNESCO. (2019). AI in Education: Challenges and Opportunities for Sustainable Development.
7. वेंकटेश, मुरलीधर. (2021) एआई एंड द फ्यूचर ऑफ स्टोरीटेलिंग इन एजुकेशन. *जर्नल ऑफ एडुकेशनल टेक्नोलॉजी*।
8. पंचतंत्र (विश्व साहित्य की धरोहर)।